भूमि, मकान व जायदाद

क्या आप अपना घर खरीद पाएंगे? ज्योतिष इसके बारे में क्या कहता है?

आज के समाज में अपना घर होना आवश्यक है। लोगों को उनकी भौतिक संपत्ति से आंका जाता है जो वे अपने जीवन में जमा करते हैं। हर कोई चाहता है कि उनका घर स्वीट होम हो।

बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिन्हें आसानी से होम लोन मिल जाता है और कई ऐसे होते हैं जो आवेदन करते रहते हैं लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिलता है। फिर ऐसे लोग होते हैं जिनके आवेदन को किसी कारण अंतिम क्षण में नकार दिया जाता है और बाद में कुछ गलती होने पर भी इसे मंजूरी दे दी जाती है। यह सब **जातक** की कुंडली से आंका जा सकता है।

वैदिक ज्योतिष में ऐसे योग हैं जो किसी जातक की संपत्ति की स्थिति को निर्धारित करते हैं। चतुर्थ भाव जातक की चल और अचल संपत्ति का **निर्धारण** करने के लिए मुख्य भाव है

गृह, भूमि, संपत्ति के मालिक के लिए जिम्मेदार ग्रह----------

1-] **मंगल:** अचल संपत्ति के लिए मंगल ग्रह कारक ग्रह है। यह एक ऐसा ग्रह है जो एक अच्छा घर देता है।

2-] **शनि** स्वयं का घर खरीदवाते हैं -शनि वह ग्रह है जो भूमि, पुराने मकान **अर्थात्** पुनर्खरीद **कर** घर देता है।

3-] **शुक्र** ऐसा ग्रह है जो एक भव्य घर देता है।

4-] **1, 2, 4, 11 भाव** ऐसे **भाव** हैं जो एक या **कई तरीकों** से **भूमि** या संपत्ति का संकेत देते हैं।

5- } **जन्मलग्न** वह **भाव** है जो स्वयं की शारीरिक क्षमता को दर्शाता है।

6- } **द्वितीय भाव**: यह आपके बैंक बैलेंस का **भाव** है। अगर आपके पास धन नहीं होगा तो आप घर नहीं खरीद पाएंगे।

7-] **चतुर्थ भाव:** चतुर्थ भाव संपत्ति, खुशी और वाहनों का घर होता है। इस प्रकार इस **भाव** की स्थिति को **जातक** के जीवन में **स्थायी सम्पत्ति** की स्थिति का आकलन करने के लिए ठीक से आंका जाना चाहिए।

8- **]** **एकादश भाव**: यह लाभ और इच्छाओं की पूर्ति का मुख्य **भाव** है। यह वह **भाव** है जो यह तय करता है कि आपको खुद के घर में खुशियाँ मिलेंगी या नहीं।

1- **चतुर्थ** भाव संपत्ति, मन की शांति, माँ, गृह जीवन, स्व और पैतृक गुणों, सामान्य खुशी, का घर है। लेकिन मुख्य रूप से यह संपत्ति का घर है।

2- यदि चतुर्थेश व लग्नेश शुभ भाव में स्थित हो तो व्यक्ति के पास कई घर हो सकते हैं। चौथे भाव की राशि का स्वामी अपने स्वयं की राशि में, चतुर्थ भाव में उच्च का या मित्र राशि में हो या चतुर्थ भाव में स्थित उच्च राशिस्थ ग्रह सुंदर घर देता है।

3- लग्न व चन्द्रमा से एकादश भाव के स्वामी द्वारा चतुर्थ भाव सकारात्मक रूप से प्रभावित होना चाहिए- लग्नेश व चतुर्थेश में युति, चतुर्थ भाव और लाभेश में सम्बन्ध होने से बहुत अप्रत्याशित तरीके से घर का लाभ होता है।

4- दशमेश का चतुर्थश या चतुर्थ भाव से सम्बन्ध महल जैसे विशाल घर को इंगित करता है।

5- चतुर्थ भाव और दशमेश बलवान और मित्र हो तो बहुत अधिक जमीन जायदाद की संभावना को दर्शाता है।

6- चतुर्थ भाव में स्थित बुध कलात्मक घर को दर्शाता है

7- चतुर्थ भाव में चंद्रमा नए घर देता है, जातक घर का निर्माण करेगा लेकिन अक्सर घर को स्थानांतरित करने का पाया गया। जातक का भूमि और कृषि में भाग्योदय होता है।

8- चतुर्थ भाव में सूर्य इंगित करता है कि जातक को पतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी।

9. द्वितीय भाव में बलवान सूर्य पैतृक सम्पत्ति को दर्शाता है और निर्बल सूर्य हानि करता है।

10- चतुर्थ भाव में बृहस्पति हो तो मजबूत और टिकाऊ घर प्राप्त होता है।

11- चतुर्थ भाव में सूर्य + केतु, कमजोर घर देते हैं।

12- चतुर्थ भाव में शनि + राहु चट्टानों और पत्थरों से बना पुराना घर देते हैं

13- चतुर्थ भाव में शुक्र बहुत ही सुन्दर घर देता है

14- चतुर्थ में मंगल + राहु पत्थर का घर देते हैं

15- चतुर्थ भाव में चंद्रमा + शुक्र बहुमंजिला घर देते हैं।

16- चतुर्थ भाव में मंगल + केतु ईंट का घर देते हैं।

17- चतुर्थ भाव में बृहस्पति लकड़ी का घर देता है, सूर्य घास का घर देता है।

18- चतुर्थेश स्वराशिस्थ उच्च या मित्र राशि का या चतुर्थ भाव में बैठा हुआ ग्रह और चतुर्थ भाव में नवमेश एक सुन्दर घर देते हैं।

19- चतुर्थेश व नवमेश में परिवर्तन योग हो और मंगल के साथ हो तो बहुत अधिक संपत्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

20- लग्नेश शुक्र चतुर्थ भाव में बली हो या यदि चतुर्थेश सप्तम में हो या यदि सप्तमेंश व चतुर्थेश मित्र हो और संयुक्त हों तो जातक को को अपनी पत्नी या ससुराल के माध्यम से भूमि या घर मिलेगा।

21- लग्न व चंद्रमा से चतुर्थेश पर मंगल का सकारात्मक प्रभाव भूमि या संपत्ति का संकेत देता है।

22- यदि पराक्रम भाव में बुध स्थित हो और चतुर्थ भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में हो तो व्यक्ति को सुंदर घर मिलेगा।

23- यदि चतुर्थेश स्व या उच्च नवांश में हो तो जातक को भूमि, वाहन, गृह आदि का स्वामित्व प्राप्त होता है।

24- जो ग्रह चतुर्थ भाव में उच्च राशिस्थ होते है, उनमें भी जातक को संपत्ति देने की क्षमता होती है।

25. यदि जन्म कुण्डली या नवांश कुण्डली में या दोनो में चतुर्थेश अपनी स्व मित्र या उच्च राशि में स्थित हो तो भूमि व सम्पत्ति प्राप्त होती है।

26- यदि नवमेश त्रिकोण में स्थित हो और चतुर्थेश मित्र राशि में स्थित हो तो अच्छ घर की प्राप्ति होती है।

27- यदि चतुर्थ भाव का स्वामी मंगल या शनि या शुक्र से युक्त हो तो भी जातक को घर का वरदान प्राप्त हो सकता है।

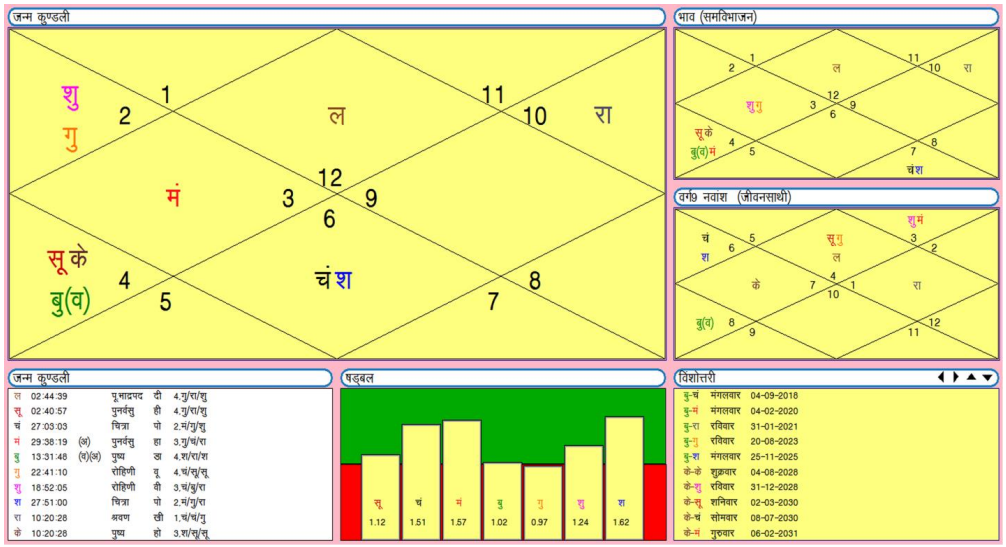

स्वयं का घर खरीदने के लिए अच्छा समय

.....

1. घर खरीदने के लिए मंगल, शुक्र, बृहस्पति की दशा अवधि अनुकूल होती है।

2. लग्न या चंद्रमा से चतुर्थ भाव के स्वामी की महादशा और अंतर्दशा में - मंगल की महादशा और अन्तर्दशा में

3. जन्मलग्न या चंद्रमा से चतुर्थ भाव में कुंडली में शनि और बृहस्पति का दोहरा गोचर हो तब

4 जन्मलग्न या चन्द्रमा से चतुर्थ भाव या चतुर्थेश पर गोचर के मंगल की दृष्टि हो तब

5. गोचर करता हुआ मंगल जब जन्म कुण्डली में स्थित मंगल पर दृष्टिपात करे तब

6. निवास स्थान बदलने के लिए तृतीय भाव व तृतीयेश से संबंधित ग्रहों की महादशा और अंतरदशा पर विचार किया जाना चाहिए।

7. बृहस्पति / शुक्र / मंगल की महादशा / अंतर्दशा भूमि मकान खरीदने के लिए उत्तम हाती है।

8. यदि चतुर्थ भाव का स्वामी **एकादश भाव** में है या यदि मेष या वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थ भाव या **एकादश भाव** में है तो जातक मंगल की महादशा / अंतर्दशा के दौरान भूमि मकान खरीदेगा ।

यह स्थिति मकर लग्न व सिंह लग्न में तथा मिथुन लग्न में होगी।

9- महादशा **नाथ** मुख्य कारक है जो यह तय करता है कि **जातक** के पास संपत्ति होगी या नहीं।

---

10. **चतुर्थेश, द्वितीयेश, नवमेश व एकादशेश की** दशा **जातक** को घर देने में सक्षम है।

11- सूर्य जीवन के मध्य में **स्थायी सम्पत्ति** देता है जहाँ चन्द्रमा जीवन के आरंभ में देता है।

12- मध्यम आयु में घर प्रदान करने के लिए सूर्य और मंगल कारक हैं।
13- कम आयु में घर प्रदान करने के लिए चंद्रमा कारक है।
14- बुध 32 से 36 **वर्ष** की आयु में घर दे सकता है।
15- बृहस्पति, शुक्र और राहु कम आयु में संपत्ति दे सकते हैं।
16- शनि संपत्ति को 44 **वर्ष की** आयु के बाद और केतु 52 **वर्ष की** आयु के बाद दे सकता है।

जन्म कुण्डली

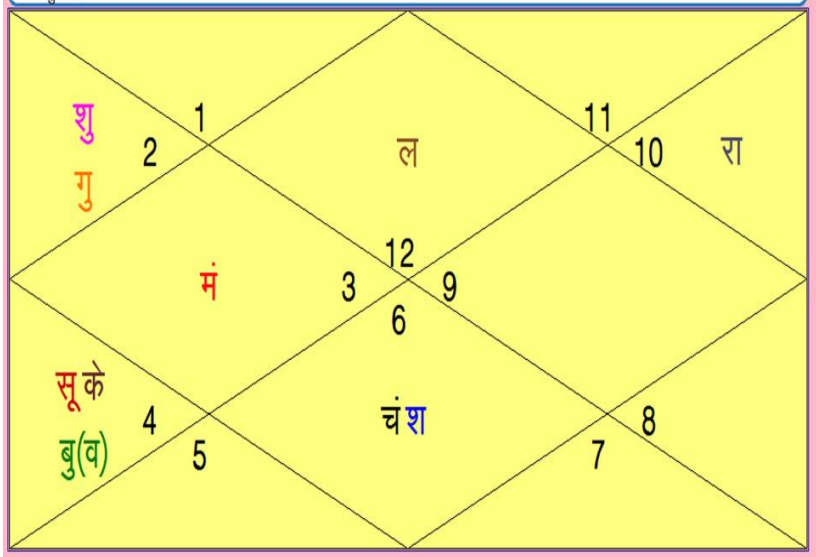

भाव (समविभाजन)

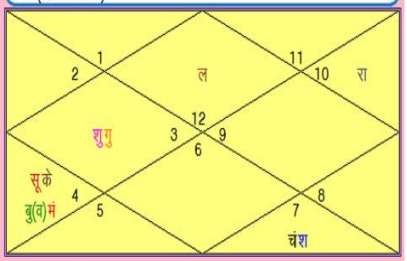

वर्ग9 नवांश (जीवनसाथी)

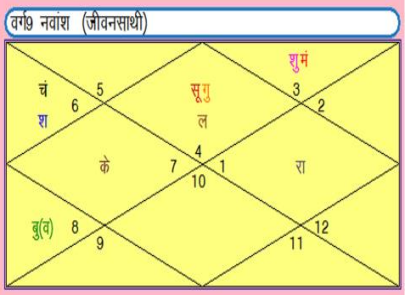

जन्म कुण्डली

ल	02:44:39		पूभाद्रपद	दी	4.गु/रा/शु
सू	02:40:57		पुनर्वसु	ही	4.गु/रा/शु
चं	27:03:03		चित्रा	पो	2.मं/गु/शु
मं	29:38:19	(अ)	पुनर्वसु	हा	3.गु/चं/रा
बु	13:31:48	(व)(अ)	पुष्य	डा	4.श/रा/श
गु	22:41:10		रोहिणी	वू	4.चं/सू/सू
शु	18:52:05		रोहिणी	वी	3.चं/बु/रा
श	27:51:00		चित्रा	पो	2.मं/गु/रा
रा	10:20:28		श्रवण	खी	1.चं/चं/गु
के	10:20:28		पुष्य	हो	3.श/सू/सू

षड्बल

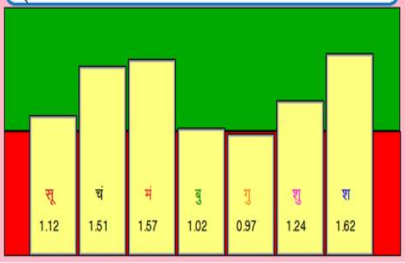

विंशोत्तरी

बु-चं	मंगलवार	04-09-2018
बु-मं	मंगलवार	04-02-2020
बु-रा	रविवार	31-01-2021
बु-गु	रविवार	20-08-2023
बु-श	मंगलवार	25-11-2025
के-के	शुक्रवार	04-08-2028
के-शु	रविवार	31-12-2028
के-सू	शनिवार	02-03-2030
के-चं	सोमवार	08-07-2030
के-मं	गुरुवार	06-02-2031

जन्म कुण्डली

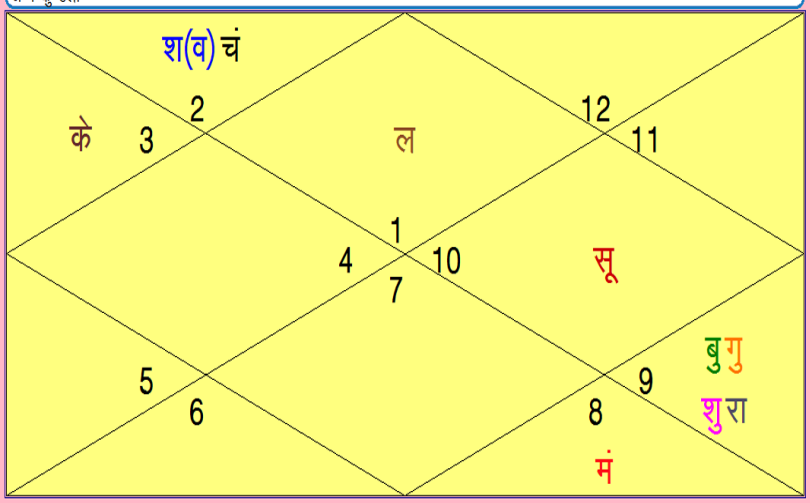

भाव (समविभाजन)

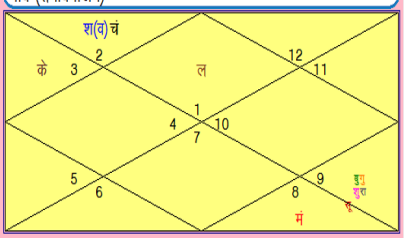

वर्ग9 नवांश (जीवनसाथी)

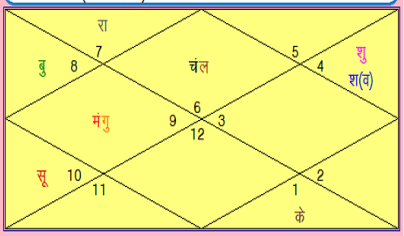

जन्म कुण्डली

ल	17:46:37		मरणी	लू	2.शु/मं/बु
सू	02:37:57		उत्तराषाढ़ा	नो	2.सू/गु/मं
चं	27:06:14		मृगशिरा	वो	2.मं/गु/शु
मं	17:51:59		ज्येष्ठा	नो	1.बु/बु/रा
बु	24:38:34	(अ)	पूर्वाषाढ़ा	ढा	4.शु/बु/शु
गु	27:55:02	(अ)	उत्तराषाढ़ा	मे	1.सू/चं/श
शु	12:10:16		मूल	भी	4.के/बु/सू
श	20:53:03	(व)	रोहिणी	वू	4.चं/शु/सू
रा	22:57:08		पूर्वाषाढ़ा	फा	3.शु/श/शु
के	22:57:08		पुनर्वसु	के	1.गु/श/सू

षड्बल

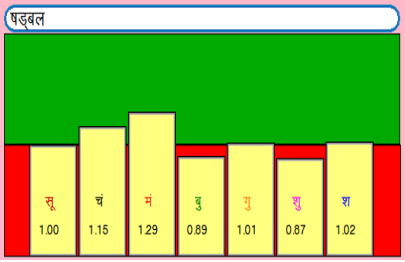

विंशोत्तरी

श-शु	गुरुवार	15-11-2018
श-सू	शुक्रवार	14-01-2022
श-चं	मंगलवार	27-12-2022
श-मं	रविवार	28-07-2024
श-रा	शुक्रवार	05-09-2025
श-गु	बुधवार	12-07-2028
बु-बु	शुक्रवार	24-01-2031
बु-के	मंगलवार	21-06-2033
बु-शु	रविवार	18-06-2034
बु-सू	शनिवार	18-04-2037

संपत्ति का नुकसान----------

जबकि कुंडली में संपत्ति के लाभ के योग हैं, नुकसान के योग भी उल्लिखित हैं:----------

1. यदि चतुर्थेश छठे, आठवें या बारहवें भाव के नक्षत्र में स्थित हो और चतुर्थ भाव में मंगल या सूर्य स्थित हो तो जातक का घर नष्ट होता है।

2. यदि चतुर्थेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो और मंगल द्वारा प्रभावित हो तो जातक की भूमि व मकान नष्ट हो जाते हैं।

3. चतुर्थ भाव में पीड़ित ग्रह और निर्बल मंगल स्थित हो तो पैतृक सम्पत्ति की हानि होती है। चतुर्थेश और लग्नेश यदि 12 वें भाव में हों तो जातक किसी दूसरे के घर में या विदेश में रहेगा।

4. चतुर्थेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हों और लग्नेश पीड़ित हों तो जातक सरकार की कार्यवाही के माध्यम से संपत्ति के नुकसान से पीड़ित होता है।

5. पीड़ित या नीच राशिस्थ चतुर्थेश यदि अष्टम भाव में स्थित हो जातक को मकान व भूमि की हानि होती है। नीच राशिस्थ चतुर्थेश यदि सूर्य के साथ भी हो जातक को शासनादेश या सरकारी डिक्री द्वारा प्राप्त संपत्ति का नुकसान दर्शाता है।

6. चतुर्थेश यदि तृतीय भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक को अल्प मात्रा में स्थायी सम्पत्ति प्राप्त होती है।

7- यदि चतुर्थेश तीसरे भाव में है तो संपत्ति का नुकसान होगा।

8- यदि चतुर्थेश नीच राशिस्थ होता है तो जीवन में किसी समय किसी तरह से संपत्ति का नुकसान होगा।

9- यदि चतुर्थेश 6, 8, 12 में है तो नुकसान की संभावना बहुत अधिक है।

10- यदि चतुर्थ भाव का स्वामी निर्बल हो और उसी कुंडली में शनि और मंगल भी लग्न चार्ट और नवांश में निर्बल हों तो संपत्ति के नुकसान की संभावना बहुत अधिक होती है।

11- यदि दुष्ट ग्रह चौथे घर या चौथे घर के स्वामी को देखते हैं तो उनकी दशा में वे स्थायी संपत्ति से संबंधित नुकसान दे सकते हैं।

12. षष्ठेश के साथ चतुर्थेश का सम्बन्ध हो, जबकि द्वादशेश का भी सम्बन्ध हो, तो विवादों और धोखाधड़ी के कारण संपत्ति का नुकसान होता है।

13. द्वादश भाव में चतुर्थेश की स्थिति भी संपत्ति के नुकसान को दर्शातो है

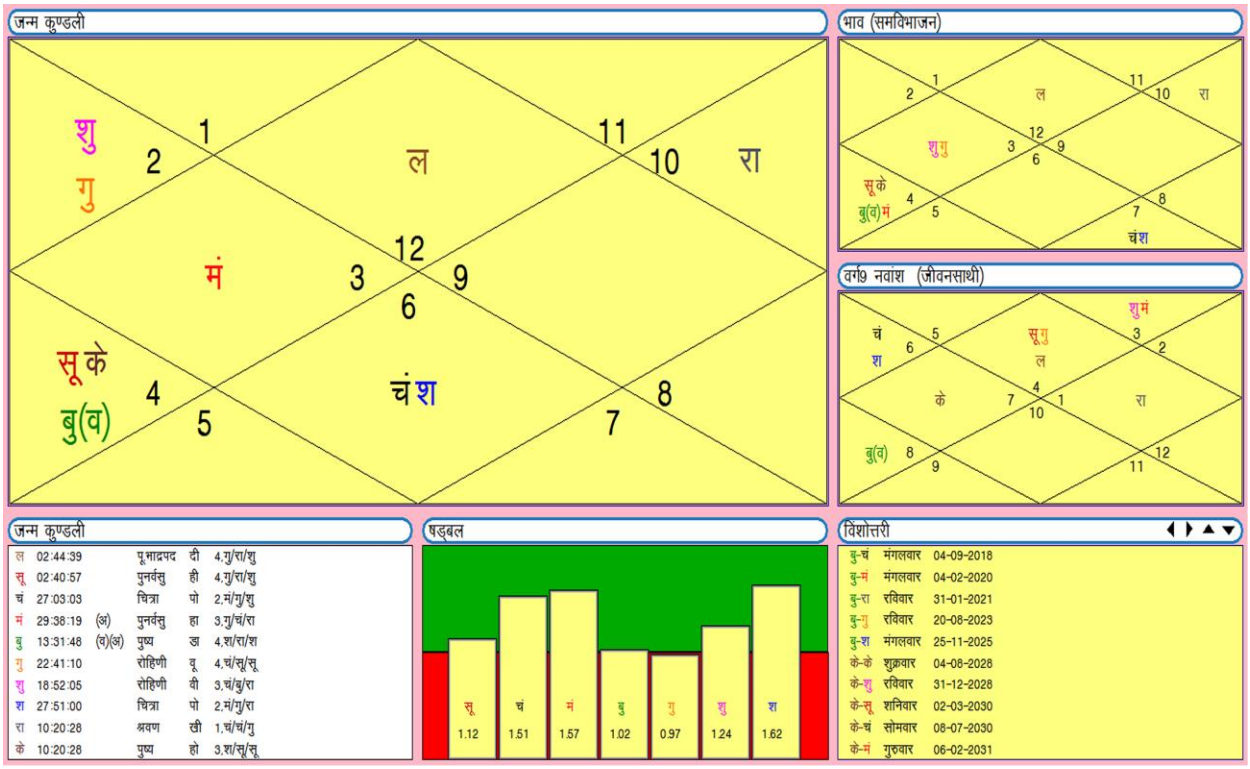

ये कुछ बिंदु थे जिनके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में संपत्ति की स्थिति से संबंधित मुद्दों को जान सकता है। लेकिन घर खरीदने या घर बेचने से पहले किसी योग्य ज्योतिषी से हमेशा सलाह लेनी चाहिए।